Pluralism
बहुलवाद

* सम्प्रभुता के सम्बन्ध में परम्परागत सिद्धान्त यह रहा है कि वह असीम और अविभाज्य है। बोदाँ, हॉब्स तथा ऑस्टिन के मतानुसार सम्प्रभु की इच्छा सर्वोच्च और सर्वोपरि होती है।
* राज्य एक ऐसा सर्वव्यापी संगठन है जिसमें शेष सभी समुदायों के हित समाविष्ट हैं। बहुलवाद राज्य की इस मान्यता का खण्डन करता है।
* गायर्के, मेटलैण्ड, डॉ. फिगिस, बार्कर, लॉस्की और मैकाइवर ने भिन्न-भिन्न तर्कों के आधार पर सम्प्रभुता का खण्डन किया है।
* क्रैब ने तो यहाँ तक कह डाला है कि- "प्रभुसत्ता की धारणा को राजनीतिक सिद्धान्तों में से निकाल देना चाहिए"
* मेटलैण्ड, बार्कर और लास्की का कहना है कि प्राचीन व मध्ययुगीन राज्य सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न नहीं थे।

* बहुलवादियों का एक तर्क यह भी है कि ऑस्टिन ने जिस निरंकुश व निश्चित सम्प्रभु की कल्पना की थी, वह वर्तमान परिस्थितियों में कहीं भी देखने को नहीं मिलता।
* जॉन चिपमैन ग्रे के शब्दों में, "यह पता लगाना असंभव है कि अमुक राज्य में वास्तविक शासक कौन है"।
* जस्टिस होम्स के शब्दों में – सम्प्रभुता का सम्बन्ध शक्ति से है और कोई भी मानवशक्ति असीम नहीं होती।
* बहुलवादियों का कहना है कि राज्य और समाज, ये दोनों एक दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं।
* राज्य समुदायों के आन्तरिक मामलों तथा उनके उद्देश्यों या कार्यविधियों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।
* राज्य को कानून का स्रोत मानना गलत है। कानून के मूल स्रोत हैं - रीतिरिवाज, सामाजिक आवश्यकताएँ

Scanned By Scanner Go

* बहुलवादियों के मतानुसार कानून शासक और नागरिक दोनों के लिए मान्य है। इसलिए यह कहना गलत है कि कानून उच्च सत्ता द्वारा निम्न स्तर के व्यक्तियों को दिया गया आदेश है।

* अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शांति और व्यवस्था बनाये रखने के लिये यह आवश्यक है कि राज्यों की निरंकुश सत्ता पर प्रतिबन्ध लगाये जाय।

* कैटलिन के कथनानुसार, "बीसवीं शताब्दी कि प्रभावशाली अधिराष्ट्रीय संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। "पुराने इंजनों यानी पुराने अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों में जंग लग गया है, उनमें कभी-भी विस्फोट हो सकता है। इंजिनियरों का यह दायित्व है कि सैयार रहे यह मशीन चलती रहे, उनका कार्य यह नहीं है कि चुपचाप बैठे सर्वनाश की वेला की प्रतीक्षा करते रहें।"

pol-sc (H)
part-I
Paper-I

Rama kant pandey
S.R.A.P. college
Bara chakiya

Scanned By Scanner Go